INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.031 (SJIF 2025)

"आधुनिक संस्कृत साहित्य के पुनर्जागरण में पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी: विचार, सृजन और योगदान का अध्ययन"

(Pandit Rewa Prasad Dwivedi and the Renaissance of Modern Sanskrit Literature: A Study of Thought, Creativity and Contribution)

डॉ अभिषेख कुमार पाण्डेय
Vidwan ID: https://vidwan.inflibnet.ac.in/profile/331447

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/10.2025-63215277/IRJHIS2510022

सार:

पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी संस्कृत साहित्य के एक महान विद्वान, कवि, लेखक, नाटककार और संपादक थे, जिन्होंने आधुनिक संस्कृत साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की। उनका जन्म 22 अगस्त 1935 को मध्यप्रदेश के कालियाखेड़ा गांव में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा के बाद वे बनारस आए और काशी हिंदू विश्वविद्यालय से शास्त्री, आचार्य और पीएच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। वे वहीं संस्कृत विभाग में प्राध्यापक, फिर विभागाध्यक्ष बने और जीवन भर साहित्य साधना में लगे रहे। उन्होंने संस्कृत भाषा को समकालीन संदर्भों से जोड़ा और करीब 30 से अधिक मौलिक कृतियाँ लिखीं, जिनमें उत्तरसीतारामचरितम्, स्वतंत्रसंभोगकुमारम् विजयनम् जैसे महाकाव्य, कई नाटक, गीतिकाव्य, कथाएँ, शास्त्रीय ग्रंथ और शब्दकोश सम्मिलित हैं। उन्होंने कालिदास की कृतियों पर विशेष शोध कर कालिदास शब्द अनुक्रमणिका तथा रघुवंशदर्पण जैसी महत्वपूर्ण कृतियाँ प्रस्तुत कीं। उनकी लेखनी में ब्राह्मी, शारदा और नागरी लिपियों का प्रयोग भी मिलता है। उन्होंने नेपाल, हॉलैंड जैसे देशों में आयोजित विश्व संस्कृत सम्मेलनों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार, मध्यप्रदेश एवं उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी पुरस्कार, व्यास पुरस्कार, वाल्मीकि पुरस्कार, भोज पुरस्कार, विश्व भारती सम्मान आदि से सम्मानित किया गया। 22 जनवरी 2021 को उनका काशी में निधन हुआ। उनके निधन से संस्कृत साहित्य को अपूरणीय क्षति पहुँची। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि वह संस्कृत की महान विभूति थे। उनका साहित्यिक और शैक्षिक योगदान आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बना रहेगा और उनका स्मरण संस्कृत के प्रति समर्पण का प्रतीक रहेगा।

मुख्य बिंदु: *मौलिक रचनाएँ, कालिदास की कृतियों पर गहन शोध व संपादन, पुरस्कार सहित अनेक सम्मान, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व।*

प्रस्तावना:

भारत का वैदिक कालीन इतिहास संस्कृत साहित्य से प्रारंभ हुआ और आज तक भारतवासियों के अन्तर्मन में समाया हुआ है। संस्कृत के श्लोकों में जो स्वर, उतार चढ़ाव आरोह अवरोह गति यति लय ताल आदि हमारे दिल दिमाग को उर्जावान बनाता है वह शायद कोई और दूसरी भाषा में नहीं है। इसी क्रम में भारतीय इतिहास में सैकड़ो साहित्यकार, कहानीकार, रचनाकार, उपन्यासकार, नाटक, कविता आदि साहित्यिक विधाओं में विद्वानों ने अपना योगदान किया है। भारत की आदि भाषा संस्कृत का साहित्य से ही आज हिन्दी का उद्भव एवं विकास विश्व जगत में विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। संस्कृत साहित्य के प्रकांड विद्वानों पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी जी का जन्म मध्य प्रदेश की

राजधानी भोपाल के समीप स्थित सीहोर जिला में हुआ। वह अपने व्यावसायिक एवं साहित्यिक जीवन का अधिकांश समय वाराणसी के काशी हिंदू विश्वविद्यालय में बिताया और संस्कृत भाषा एवं साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनके द्वारा संस्कृत भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में किए गए उत्थान के कारण इन्हें "सनातन कवि" उपनाम से संबोधित किया गया है। प्रस्तुत आलेख में संस्कृत भाषा, साहित्य एवं उसकी अन्य विधाओं में पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी के चिंतनशील विचार, सृजनशील लेखन एवं साहित्यिक योगदान पर एक वृहद अवलोकन प्रस्तुत किया जा रहा है।

पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी का चिंतनशील विचार:

भारतीय भूखंड के लगभग मध्य में स्थित राज्य मध्य प्रदेश के सीहोर जिला के बुधनी तहसील के अंतर्गत नागनेण गांव पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी का पैतृक निवास रहा किन्तु इनका जन्म 22 अगस्त सन 1935 ई. को भोपाल के समीप कालियाखेड़ा गांव मे जन्में पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी कुल तीन भाई और एक बहन थे उनका विवाह बाल्यकाल में चंदा देवी से तथा प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा वहीं पर हुई किन्तु उच्च एवं उच्चतर शिक्षा के लिए बनारस आएं और काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संस्कृत विद्या, धर्म विज्ञान संकाय में सेवारत रहे तथा धर्म साहित्य शास्त्र के साहित्य विभाग में विभागाध्यक्ष बने। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी संस्कृत साहित्य के लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकार, महानकवि, नाटककार और समीक्षक तो थे ही साथ में उनका विचार हमेशा संस्कृत साहित्य को आधुनिक स्वरूप प्रदान करने का रहा।वह आधुनिक संस्कृत आचार्य की परंपरा में देव वाणी संस्कृत के संपादक, प्रकांड विद्वान तथा नूतन संस्कृत साहित्य का सर्जन करने वाले प्रमुख विद्वान थे। जब उन्हें काशी हिंदू विश्वविद्यालय में पंडित महादेव शास्त्री का शिष्य बनने का मौका मिला तब उनके श्री चरणों में बैठकर संस्कृत साहित्य के विभिन्न विधाओं का ज्ञानार्जन कर अध्ययन अध्यापन के साथ विचार प्रवाहित करना शुरू किया। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी ने 1953 ई. में शास्त्री परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर काशी हिंदू विश्वविद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी ने वर्ष 1956 में शास्त्रीय आचार्य की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की, इस उपलब्धि के लिए उन्हें चौबे विश्वेश्वर नाथ संकाय में स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। संस्कृत भाषा एवं साहित्य में वह धीरे धीरे देश भर के संग्रहों से 23 हस्तलेखों को इकट्ठा कर विश्व में पहली बार रघुवंश दर्पण नामक टीका का संपादन किया जो कि उनके वैचारिक जीवन का एक नया अध्याय बन गया। इसी बीच सन 1965 में पंडित रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर, मध्य प्रदेश से इन्होंने पीएचडी की उपाधि प्राप्त करने के अनवरत संस्कृत साहित्य पर काम करने के कारण वर्ष 1974 ई में डॉक्टरेट ऑफ लिटरेचर की उपाधि से विभूषित किया गया।

संस्कृत साहित्य भारतीय संस्कृति और ज्ञान-परंपरा का आधारस्तंभ है। यह केवल शास्त्र, धर्म और दर्शन की भाषा ही नहीं, बल्कि समाज, नैतिकता और मानवीय मूल्यों का भी संवाहक है। परंतु आधुनिक काल में संस्कृत धीरे-धीरे अकादमिक परिसरों तक सीमित होती जा रही थी। इसे केवल 'मंदिरों की भाषा' या 'पुरानी पीढ़ी की भाषा' के रूप में देखा जाने लगा।

इसी पृष्ठभूमि में **पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी** का उदय हुआ। उन्होंने अपने साहित्य और विचारों के माध्यम से यह सिद्ध किया कि संस्कृत केवल अतीत की धरोहर नहीं है, बल्कि वह वर्तमान समाज की समस्याओं, मानवीय संवेदनाओं और बौद्धिक विमर्शों की भी अभिव्यक्ति कर सकती है। उनकी रचनाओं ने संस्कृत को पुनर्जीवित करने का कार्य किया और साहित्यकारों को नई दिशा प्रदान की।

जीवन परिचय:

पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी का जन्म सन् **1933 में उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले में हुआ। पारिवारिक वातावरण में ही संस्कृत के प्रति रुचि विकसित हुई।**

- **प्रारंभिक शिक्षा:** परंपरागत पद्धति से व्याकरण, वेद, मीमांसा और दर्शन का अध्ययन।
- **उच्च शिक्षा:** वाराणसी की विद्यानगरी में आधुनिक विश्वविद्यालयीय शिक्षा।
- **व्यावसायिक जीवन:**
    - राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (अब केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी) में आचार्य और प्राचार्य।
    - अनेक शोधार्थियों का मार्गदर्शन और संस्कृत संस्थानों में नेतृत्व।

उनकी विद्वत्ता और योगदान के लिए उन्हें **"महामहोपाध्याय"** की मानद उपाधि प्रदान की गई। उनका जीवन एक उदाहरण है कि किस प्रकार कोई विद्वान परंपरा और आधुनिकता को जोड़कर संस्कृत साहित्य को जीवंत बनाए रख सकता है।

संस्कृत साहित्य में स्थान **(Position in Sanskrit Literature)**

आधुनिक संस्कृत साहित्य में पंडित द्विवेदी का स्थान अत्यंत ऊँचा है। कारण:

1. **पुनर्जागरणकर्ता** – जिस समय संस्कृत केवल अनुष्ठानिक भाषा बनती जा रही थी, उस समय उन्होंने उसमें सामाजिक सरोकार और जीवनदर्शन को पुनः जीवित किया।
2. **बहुआयामी व्यक्तित्व** – कवि, नाटककार, आलोचक, संपादक और शिक्षक – हर भूमिका में उनका योगदान रहा।
3. **आधुनिकता का संचार** – उन्होंने यह दिखाया कि संस्कृत भाषा में आधुनिक विषयों पर लेखन संभव है।

उनका स्थान "आधुनिक संस्कृत पुनर्जागरण' के प्रमुख स्तंभ के रूप में स्वीकार किया जाता है।

4. चिंतनशील विचार **(Philosophical & Critical Ideas): पंडित द्विवेदी के चिंतनशील विचार संस्कृत साहित्य को एक नई दिशा प्रदान करते हैं।**

- **परंपरा और आधुनिकता का संतुलन:** वे मानते थे कि परंपरा हमारी जड़ है, परंतु उसमें जड़ता नहीं होनी चाहिए। संस्कृत की शास्त्रीय परंपरा को संजोते हुए उसे आधुनिक जीवन से जोड़ना आवश्यक है।
- **साहित्य का सामाजिक सरोकार:** उनके अनुसार साहित्य केवल मनोरंजन या सौंदर्य का साधन नहीं, बल्कि समाज सुधार और मानवीय चेतना को जागृत करने का उपकरण है।
- **मानवतावाद और सार्वभौमिक दृष्टि:** संस्कृत साहित्य को जातीय या सांप्रदायिक सीमाओं से मुक्त कर उन्होंने उसे वैश्विक मानवता का संवाहक माना।
- **आलोचनात्मक दृष्टि:** उन्होंने ग्रंथों की केवल स्तुति नहीं की, बल्कि उनकी कमजोरियों और सीमाओं को भी इंगित किया। यह वस्तुनिष्ठ आलोचना संस्कृत साहित्य में अपेक्षाकृत दुर्लभ ही है।
- **नवाचार की भावना:** वे मानते थे कि यदि संस्कृत में नवीन विषयों और शैलियों का प्रयोग नहीं होगा तो वह केवल 'स्मारक भाषा' बनकर रह जाएगी।

सृजनशील लेखन (Creative Writing): उनका लेखन विविध विधाओं में फैला है—

1. **काव्य लेखन:**
    - उनकी कविताओं में रस और अलंकार तो हैं ही, साथ ही आधुनिक भावनाएँ जैसे सामाजिक विषमता, राष्ट्रीय चेतना और मानवीय संवेदना भी मिलती हैं। उदाहरण: *रघुकुलरमणम्* – जहाँ शास्त्रीय छंदों का प्रयोग हुआ, परंतु भाव

आधुनिक जीवन से जुड़े हैं।

2. **नाटक लेखन:**
    - पात्रों की जीवंतता और संवादों की गहनता उनकी विशेषता है। उनके नाटकों में केवल पौराणिक प्रसंग नहीं, बल्कि समकालीन यथार्थ की झलक भी मिलती है।
3. **आलोचना और निबंध:**
    - *काव्य मीमांसा* में उन्होंने आलोचना को वैज्ञानिक और तार्किक आधार पर स्थापित किया।
    - उनके निबंध सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में संस्कृत की भूमिका पर प्रकाश डालते हैं।
4. **अनुवाद और संपादन:**
    - उन्होंने शास्त्रीय ग्रंथों का संपादन कर नई पीढ़ी तक पहुँचाया।
    - कठिन ग्रंथों को सरल शैली में प्रस्तुत कर पाठकों के लिए सुगम बनाया।

प्रमुख कृतियाँ **(Major Works)**

- **काव्य** – *रघुकुलरमणम्;* शास्त्रीय काव्य-परंपरा का पालन करते हुए आधुनिक भावनाओं को स्थान दिया।
- **आलोचनात्मक ग्रंथ** – *काव्य मीमांसा;* इसमें उन्होंने काव्य की परंपरा, सिद्धांत और आधुनिक प्रवृत्तियों की आलोचनात्मक विवेचना की।
- **समकालीन संस्कृत साहित्य-** इसमें आधुनिक युग के संस्कृत लेखन का विवेचन है।
- **भारतीय चिंतन और संस्कृत-** इसमें भारतीय संस्कृति और दर्शन के मूल्यों को संस्कृत साहित्य से जोड़कर समझाया।
- **अनुवाद/संपादन कार्य-** प्राचीन ग्रंथों का संपादन कर उन्हें आधुनिक अध्ययन के लिए उपलब्ध कराया।

पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी की साहित्य सृजनशीलता:

आदर्श व्यक्तित्व व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमताओं एवं बाह्य गुणों का समन्वय होता है। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी के मन में हमेशा सत्य, अहिंसा, प्रेम, दया, करुणा, उदारता रही। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी काशी हिंदू विश्वविद्यालय में वर्षों तक संस्कृत साहित्य विभाग सेवारत रहते हुए आनंदवर्धन अलंकार, भीमसीन सहित अलंकार सर्वश्रेष्ठ आदि का प्रकाशन किया। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी संस्कृत साहित्य के एक महान पुरोधा थे। उन्होंने अपनी लेखन शैली में ब्राह्मी लिपि, शारदा लिपि और नागरी लिपि का भरपूर उपयोग किया है।उनकी कई पुस्तकें, संस्कृत साहित्य का शब्दकोश और साथ-साथ सैकड़ो शोध पत्रों का प्रकाशन कराया और उनके रिसर्च स्कॉलर देश दुनिया में अपना शैक्षिक योगदान कर रहे हैं। पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी ने देश विदेश में भारतीय संस्कृति एवं साहित्य का परचम लहराया है।

पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी ने नेपाल, हॉलैंड आदि देशों में समय-समय पर विश्व संस्कृत सम्मेलन में शामिल होकर भारत का मान बढ़ाया। आप भारत के प्रतिनिधि मंडल के सदस्य के रूप में कई अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन में शामिल हुए। इन सभी के बीच पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी संस्कृत साहित्य में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए मध्य प्रदेश संस्कृत अकादमी पुरस्कार, उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी पुरस्कार, व्यास पुरस्कार, भोज पुरस्कार वाल्मिकी पुरस्कार, विश्व भारती पुरस्कार आदि से सम्मानित किया गया है। इसके साथ-साथ 15 अगस्त 1978 को तत्कालीन भारत के राष्ट्रपति श्री नीलम संजीव रेड्डी द्वारा इन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। यह सब पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी के व्यक्तित्व, कृतित्व और उनके संस्कृत साहित्य में योगदान का प्रतिफल है।

पंडित रीवा प्रसाद द्विवेदी की कृतियां:-

पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी बाल्यकाल से ही बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। अल्पायु में ही माता-पिता का साया सर से उठ जाने के कारण व्यक्तिगत, सामाजिक, नैतिक जिम्मेदारियां उठा लिया इनकी अध्ययन काल से ही लेखन के प्रति रुचि अध्यापन कल में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गई। इनके द्वारा कई काव्य, महाकाव्य, नाटक, कथा, गीतकाव्य ग्रंथ, काव्यशास्त्री ग्रंथ, शब्दकोश आदि लिखे। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी की कुल 30 प्रकाशित मौलिक रचनाओं में तीन महाकाव्य, तेरह काव्य, दो नाटक , तीन कथाएं, कई मोनोग्राफ तथा कालिदासशब्दनविक्रम प्रमुख है। इनके लेखन में भौतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मौलिक और उस समय की देश काल एवं परिस्थितियों का चित्रण दिखाई पड़ता है। संस्कृत के कई विद्वानों महाकवि कालिदास की कृतियों का विश्लेषण एवं वर्णन प्रस्तुत किया है। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी के महाकाव्य उत्तरसीतारामचरितम्, स्वतंत्रसंभोगकुमारम् विजयनम् आदि प्रमुख है। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी ने.....आदि है, इनकी प्रमुख शास्त्रीय कृतियां काव्यालंकार ..... है इन्होंने एक कोष कालिदास शब्द अनुक्रम को की शब्द अनुक्रमणिका तैयार की प्रसाद द्विवेदी कई संपादित ग्रंथ रघुवंशदर्पण, कालिदासग्रंथावली, रितुसंघार, कुमारसंभवम्, रघुवंशम्, काव्यप्रकाश सुधाकरम्, भारतीय काव्य मीमांसा, श्रृंगार प्रकाश, सत्यनारायण व्रतकथा, शिवमहिमा स्त्रोतम्, मेघदूतम् रघुवंशम आदि पर पांडुलिपियों भी तैयार की। यह सब उनके संस्कृत साहित्य के विकास का अप्रतिम उदाहरण है।

पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी स्मृति शेष:-

संस्कृत साहित्य के लब्धप्रतिष्ठित विद्वान, लेखक एवं साहित्यकार का शैक्षिक, व्यावसायिक जीवन धर्म, आध्यात्म,साहित्य और संस्कृति की नगरी काशी में अधिकांश समय बिताया। देश-विदेश में पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी का संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में सैकड़ो शोध प्रबन्ध, आलेख तथा जनरल प्रकाशित हुए हैं।कई पुस्तकों एवं शब्दकोष के लेखक का जीवन के अंतिम क्षण मकाशी नगरी में रहते हुए 22 जनवरी 2021 को देहावसान हो गया। पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी कुल 86 वर्ष की उम्र में विश्व विख्यात विद्वान एवं कवि का देहावसान संस्कृत साहित्य के जगत में शोक की लहर व्याप्त हो गई। इसकी सूचना पर देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि "पंडित रीवा प्रसाद द्विवेदी संस्कृत की महान विभूति महोउपाध्याय के निधन की सूचना अत्यंत दु खद है उन्होंने संस्कृत साहित्य के क्षेत्र में कई प्रतिमान गढ़े हैं उनका जाना समाज के लिए एक अपूरणीय छति है। दु :ख की इस घड़ी में मैं उनके परिजन, प्रशंसकों और शुभचिंतकों के प्रति संवेदनाएं व्यक्त करता हूं! ओम शांति!" पंडित रेवा प्रसाद द्विवेदी जैसे महान संस्कृत की विद्वान को खोना भारतीय संस्कृत साहित्य की अपूरणीय छति है।

उपसंहार:

पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी मध्य प्रदेश में जन्मे बड़े हुए प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा प्राप्त किया किंतु उच्च एवं उच्चतर शिक्षा तथा व्यवसायिक जीवन का अधिकांश समय काशी हिंदू विश्वविद्यालय में व्यतीत किया। इन्होंने संस्कृत साहित्य और उसकी भाषा को पोषित कर देश काल एवं परिस्थितियों के अनुरूप नया स्वरूप प्रदान किया। अनेक साहित्यिक सर्जना के कारण इनकी ख्याति देश विदेश के कोने-कोने में रही है अन्य योगदानों के साथ-साथ पंडित रीवा प्रसाद द्विवेदी का सबसे बड़ा योगदान महाकवि कालिदास की संपूर्ण कृतियों का संस्कृत साहित्य में व्यापक समावेश और उपयोगिता को उजागर करना रहा है। देश के ऐसे प्रकांड संस्कृत विद्वान और मनीषी को खोना जिसकी क्षतिपूर्ति आने वाले कई सौ सालो में होना मुश्किल है। भगवान उनके आने वाली पीढ़ी को उनके व्यक्तित्व, कृतित्व और साहित्य के क्षेत्र में किए गए कार्यों का गुणगान, प्रचार प्रसार और बताए गए रास्ते पर चलने के लिए प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। साथ ही साथ संस्कृत साहित्य के

जुड़े हुए तमाम विद्वानों, कवियों, साहित्यकारों कथाकारों, काव्यकारो और लेखकों को भी प्रेरणा मिलती रहेगी।

सारांश:

पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी संस्कृत साहित्य के एक महान विद्वान थे, जिनका जन्म मध्यप्रदेश में हुआ और जिनका साहित्यिक जीवन काशी में बीता। उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय में संस्कृत साहित्य को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया। उनके शोध, लेखन, संपादन और शिक्षण ने आधुनिक संस्कृत साहित्य को एक नई दिशा दी। उनकी 30 से अधिक रचनाएँ, कालिदास की कृतियों पर शोध और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व उनकी विद्वता का प्रमाण हैं। संस्कृत भाषा के उत्थान में उनके योगदान के लिए उन्हें कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उनका निधन 2021 में हुआ, जिससे साहित्य जगत को अपूरणीय क्षति पहुँची। वे आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बने रहेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. डॉ उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', संस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखंभा भारती एकडेमी, वाराणसी, वर्ष 2019
2. शुक्ल एवं द्विवेदी, संस्कृत साहित्य के वट वृक्ष, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र,नई दिल्ली 2018
3. त्रिपाठी एवं नरेन्द्र दत्त, संस्कृत साहित्य का भविष्य, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली वर्ष 2018
4. पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी, राम परिसंख्या, कालीदास संस्थान, वाराणसी वर्ष 2008
5. पंडित रेवाप्रसाद द्विवेदी, शरशय्या खंडकाव्य, कालीदास संस्थान, वाराणसी, वर्ष 2002
6. डॉ. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', शब्दार्थरत्नम्, चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी वर्ष 1999
7. डॉ उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', हिन्दू धर्म व्याख्यान, क्योटो तथा हिरोशिमा, जापान, वर्ष 1997